कुचिमार तन्त्रम्



धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ (अलीगढ़) प.पी.

कुचिमार तंत्रम् _ of some anonymous author - Edited with the commentary in Hindi by पं० रामप्रसाद जी मिश्र राजवैद्य

5/e, 1975.

4

1414

Bill No. 3 / 07-08

142

2008-0307

सुधानिधि

आयुर्वेद का सर्वोत्तम मासिक पत्र

सुधानिधि हिन्दी में प्रकाशित सर्वोत्तम मासिक पत्र है इसे सभी एक स्वर से स्वीकार करते हैं। इसके प्रतिवर्ष प्रकाशित होने वाले विशेषांक अपने विषय के सर्वोत्तम एवं सर्वाङ्गपूर्ण होते हैं। सभी वैद्यों को इसका ग्राहक अवश्य बनना चाहिये।

ग्राहक बनने के नियम

१—सुधानिधि का वार्षिक मूल्य पोस्ट-व्यय सहित १३.०० ।

२—सुधानिधि के ग्राहकों को हर साल एक बड़ा विशेषांक तथा दो ल विशेषांक भी इसी मूल्य में भेंट किये जाते हैं।

३—वर्ष जनवरी से प्रारम्भ होकर दिसम्बर में समाप्त होता है।

४—सुधानिधि के ग्राहक पूरे वर्ष के लिए ही बनाये जाते हैं।

५—ग्राहक किसी भी समय बनाये जा सकते हैं, लेकिन ग्राहक को वर्ष प्रारम्भ यानी जनवरी से ग्राहक बनने के समय तक के प्रकाशित सम अङ्क तथा विशेषांक भेजकर वर्ष के आरम्भ से ही ग्राहक बना लिया जात है और उनका भी वर्ष अन्य ग्राहकों के साथ दिसम्बर में समाप्त ह जाता है।

६—केवल विशेषांकों का ही मूल्य २०.०० होगा, लेकिन ग्राहक बन जाने प यही विशेषांक मूल्य १३.०० में अन्य अङ्कों सहित मिल जायेंगे।

कुचिमारतन्त्रम्

[भाषा टीका सहित]

टीकाकार

पं० रामप्रसाद जी मिश्र राजवैद्य

आयुर्वेदाचार्य

प्रकाशक

धन्वन्तरि कार्यालय

विजयगढ़ (अलीगढ़)

प्रकाशक
मुरारीलाल गर्ग
धन्वन्तरि कार्यालय
विजयगढ़ (अलीगढ़)

पंचम संस्करण
१९७५

[redacted]

मुद्रक
धन्वन्तरि प्रेस
विजयगढ़

चतुर्थ संस्करण

प्रस्तुत पुस्तक के चार संस्करण होना ही पुस्तक की उपयोगिता का उत्तम प्रमाण है। इस पुस्तक का दूसरा भाग भी प्रकाशित करने की सूचना दी गई थी किन्तु खेद है कि अभी तक हम उसे प्रकाशित नहीं कर सके। सम्भव है शीघ्र ही प्रकाशित हो।

इस बार पुस्तक के अन्त में नपुंसकता-नाशक कुछ अव्यर्थ प्रयोग सम्मिलित कर दिये हैं। इससे पुस्तक की उपयोगिता और भी बढ़ गई है। आशा है पाठक पहले से भी अधिक इसे उपयोगी पायेंगे।

—मुरारीलाल गर्ग

प्रथम संस्करण की भूमिका

कुचिमार तन्त्र प्राचीन पुस्तक है। पाठक इसे पढ़कर यह जान सकेंगे कि इसकी मूल कापी बहुत ही अशुद्ध थी। अनेक पद भ्रष्ट थे, हमने यथा-शक्ति इसको शुद्ध कर छपाया है, तथा टीका भी सरल और सुबोध करने का प्रयत्न किया है फिर भी हमारी अल्पज्ञता से अथवा दृष्टि-दोष से जो दोष रह गये हों पाठक क्षमा करें, गत वर्ष हमने कापी मिलते ही पाठकों को इसे उपहार में देने की सूचना दे दी थी पर जब उसे हमने आदि से अन्त तक पढ़ा तब बहुत ही खेद हुआ। कारण समय बहुत ही थोड़ा था और कापी शुद्ध कर छपाने में समय अधिक अपेक्षित था और ग्राहकों के बार-बार तकाजे उपहार भेजने को आ रहे थे। अतः लाचार हो इसको रोक परिवर्तन में दूसरी पुस्तक दी थी इससे हमारे अनेक ग्राहक असन्तुष्ट हुए और अनेक ग्राहकों ने बार-बार तकाजा कर हमें हैरान किया इसलिये लाचार हो इस वर्ष इसे उपहार में देने को हम विवश हुए।

विजयगढ़
सन् १९२५ } वैद्य बांकेलाल गुप्त।

* श्री धन्वन्तरयेनमः *

कुचिमार तन्त्रम्

मङ्गलाचरणम्

श्री शंकरं नमस्कृत्य यत्पूर्वैःसमुदाहृतम् ।
हिताहितकरन्नृणां महौषधि समन्वितम् ॥१

श्री भगवान् महादेव जी को नमस्कार कर मनुष्यों के हित तथा अहित को बतलाने वाले और मन्त्र-औषधि-युक्त, पहिले आचार्यों के कहे हुए इस तन्त्र को कहते हैं ।१।

बृंहणं लेपनं चैव वश्य बन्धन वृष्यकम् ।
कन्या करं लोमकार्ष्ण्यं बन्ध्या प्रसव चिन्तनम् ॥२
पादलेपाञ्जनं तैलं रोमनाशनमेव च ।
एवमादीनिकर्माणि श्रूयन्तां तत्प्रयत्नतः ।।३

इस पुस्तक में वृद्धि करण, लेप, वशीकरण, मोहन, वाजीकरण, संकोचनं, केशकल्प, वन्ध्याकरण, प्रसवकरण, पादलेप, अञ्जन, तेल, बालनाशन आदि कार्यों का वर्णन किया गया है वह सावधान होकर सुनिये ।२–३।

+ अथ वृद्धिकरणम् +

कमलदल तैल सैन्धव-भल्लातक बीजमादहेवन्तः ।
वृहतीफल कफ सहितं माहिषंचमनः शिलावृद्धिकरम् ॥४

कमल के पत्र, सेंधा नमक, भिलावा बीज, अपामार्ग, कटेरी फल, समुद्र फेन, मैन्शिल इनको तिल के तेल और भेंस के घृत में मर्दन कर लेप करने से इन्द्री बढ़ती है ।४।

कारवल्ली फलं सर्ज-जलशूक समायुतम् ।
वृहती फल तोयेन लेपः शिश्न विवृद्धये ॥५

करेला का फल, राल सिवार, कटेरी के फल के स्वरस में मर्दन कर लेप करने से इन्द्री-वृद्धि होती है ।५।

तिलसर्षपयोश्चूर्णं सप्तपर्णस्य भस्म च ।
जलशूकं क्रमाल्लिम्पे ल्लिंगं स्यान्मुशलोपमम् ॥६

तिल को पानी में मर्दन कर इन्द्री पर लेप करें पश्चात् सरसों का चूर्ण, इसी प्रकार क्रमशः सतोना की भस्म और सिवार का भी लेप करें। इससे इन्द्री मूसल के समान हो जाती है ।

भल्लातकानि हरिताशन भस्म रूढ़ -
मम्भोजपत्र बृहती फल तोयमिश्रम् ।
उद्वर्तयेत् च शकृता महिषस्य लिंगं,
स्थूलं दृढं भवति तन्मुशलोपमानम् ॥७

भिलाये, तूतिया भस्म, कमल पत्र, कटेरी के फल जल में घोट लेप करे और भेंस के गोवर से इन्द्री का उबटन करे तो स्थूल और पुष्ट हो मूसल के समान हो जाती है ॥ ७ ॥

रोमांसं जलशूकं च माहिषं घृतमेवच ।
एतेनोद्वर्तयेल्लिगं स्थूलो भवति शाश्वतम् ॥८

मांस रोहिणी, सिवार इनको भैंस के घृत में मर्दन कर इन्द्री का उबटन करने से इन्द्री सर्वदा के लिए स्थूल हो जाती है ॥ ८ ॥

निर्मलं लिङ्गमुद्वर्त्य गोमयेन पुनः पुनः ।
सिक्तं जलेन शीतेन यावदिच्छति मानवः ॥९

निर्मली से तथा गोवर से इन्द्री का बार-बार उबटना करे और ठन्डे जल की धार धीरे-धीरे इन्द्री पर डालें तो जब तक मनुष्य की इच्छा हो तब तक इन्द्री शिथिल न हो ॥ ९ ॥

कारवेल्ल्यश्वगन्धाच जलशूकं च तत्समम् ।
वृहती फल तोयेन लिङ्गवृद्धिः प्रशस्यते ॥१९

करेला, असगन्ध, सिवार इनको कटेरी के फल के स्वरस में मर्दन कर लेप करने से लिङ्ग वृद्धि होती है ॥ १० ॥

सर्षपं तगरं कुष्ठं तालोन वृहती फलम् ।
जलशूकाश्वगन्धाच समादायैक भागतः ॥११
अजाक्षीरेण संपेष्य कुर्यादुद्वर्तनं पुनः ।
कर्ण लिङ्गस्तनानांतु वृद्धिरेषां प्रशस्यते ॥१२

सरसों, तगर, कूठ, कटेरी के फल, सिवार असगन्ध यह समान भाग ले बकरी के दूध में पीस कान, स्तन और लिंग का उबटन करे तो इनकी वृद्धि होती है ॥ १२ ॥

अश्वगन्धा च कुष्ठं च मांसी शावर कन्दकम् ।
एतदुद्वर्तितंशेफं स्थूली भवति शाश्वतम् ॥१३

असगन्ध, कूठ, जटामांसी, वाराहीकन्द को पानी में पीस उबटन नित्य करने से इन्द्री और दृढ़ हो जाती है ॥ १३ ॥

करवीरमपामार्गमश्वगन्धा च छत्रकम् ।
लाङ्गल्यान्त शिखा चैवसुबीजंकुलिजस्य च ॥१४
कर्ण बाहु भगाश्चैव वामाक्षीणां कुचद्वयम् ।
वर्धन्ते नात्र सन्देहः प्रघृष्योद्वर्तते पुनः ॥१५

कनेर की जड़, अपामार्ग, असगंध, लाल कमल, कलिकारी, अन्त-शिखा, कुलथी के बीज इनको जल में मर्दन कर कान बाहु, भग, स्तन का उबटन करने से यह निःसंदेह वृद्धि को प्राप्त होते हैं ॥ १४-१५ ॥

अश्वगन्धामपामार्गं बृहतीं श्वेत सर्षपम् ।
कुष्ठ तगर चूर्णं च पिप्पलीमरिचानि च ॥१६
एतानि समभागानि अजाक्षीरेण पेषयेत् ।
वर्धंते लेपनाल्लिङ्गं नारीणां च पयोधरम् ।

असगंध, ओंगा, (अपामार्ग) कटेरी, सरसों, कूट, तगर पीपल, मिर्च काली समान भाग ले चूर्ण कर बकरी के दूध में पीस लेप करने से स्तन और इन्द्री-वृद्धि होती है ॥ १६-१७ ॥

अश्वगन्धा वचा कुष्ठं बृहतीं श्वेत सर्षपम् ।
एतेन वर्धंते लिङ्गं नारीणां च पयोधरौ ॥१८

असगन्ध, वच, कूठ, कटेरी सफेद, सरसों इनको पानी में मर्दन कर लेप करने लिंग और स्तन बढ़ते हैं ॥ १८ ॥

पत्रं प्रियंगु नागाह्वं स्यात्तृणं चाश्वगन्धियत् ।
संचूर्ण्य मधुतैलेन शालिधान्येन दापयेत् ॥१९
चत्वारिंशद्दिनादूर्ध्वं उद्धृत्य कतिचिद्दिनैः ।
स्तनयोर्लेपनं कुर्यात् पश्चात् पीनस्तनो भवेत् ।२०

तेजपात, फूलप्रियंगु, नागकेशर, तृण विशेष, असगन्ध इनका चूर्ण कर शहद और तेल मिला साठी चावल के ढेर में गाढ़ दें और ४४ दिन बाद निकाल कर लेप करे तो स्तन पुष्ट हों ॥ २० ॥

हस्त्यश्वमूत्रैः खरसंभवेवतैलंतिलानांविपचेद्विधिज्ञः ।
तस्याथलेपेनविलासिनीनांपीनस्तनौतज्जघनाधरंच ॥२१

हाथी, घोड़ा, गदहा[1] इनका मूत्र ले और उसमें तिल का तैल डाल सिद्ध करे इस तैल के लगाने से स्तन पुष्ट होते और जांघ और अधर (होठ) बढ़ते हैं ॥२१॥

तिल सर्षपयोश्चूर्णं सप्तपर्णस्यभस्मच ।
घृतयुक् सूर्य्य संतप्तं लिङ्ग वृद्धिकरं भवेत् ॥२२

तिल, सरसों, सतोना की भस्म सबका चूर्ण कर घी मिला धूप में गरम कर मर्दन करने से इन्द्री वृद्धि होती है ॥२२॥

माषपत्रं सकर्पूरं नवीन मधुना सह ।
एतेन लिंग वृद्धिःस्यात् स्त्रीणां च महती रतिः ॥२३

माषपर्णी, कपूर को ताजे शहद में घोटकर लेप करने से इन्द्री की वृद्धि हो और स्त्रियों को प्रिय हो ॥२३॥

सार्षपं च तथा तैलं सार्द्धं च विपचेत्ततः ।
वाजिगन्धा समासेव्यास्तन कर्णादि वर्धनम् ॥२४

सरसों के तेल में सफेद सरसों और असगन्ध मिला तेल सिद्ध कर । इस तेल के मलने से स्तन, कान आदि की वृद्धि होती है ॥ २४ ॥

एरण्डं वाजिगंधा च, वचा शावर मूलकम् ।
घृतं क्षीरं वसा तैलं कर्णादीनि विवर्धयेत् ॥२५

अण्डी की जड़, असगंध, वच, लोघ, इनको घी, दूध, चरबी व तिल का तेल डालकर सिद्ध करे और इस तेल की मालिश करे तो कान आदि बढ़ते हैं ॥२५॥

यष्टीमधुक चूर्णं तु क्षीरव्यामिश्रितं पुनः ।
बृहती फल तोयेन लेपनं कुर्वतां स्त्रियः ॥२६

---

[1] तेल से मूत्र ४ गुणा लेना चाहिए । —सम्पादक ।

मुलहठी, महुआ का चूर्ण, इनको दूध में मिलाकर शुष्क करे पश्चात् कटेरी के फल के स्वरस में लेप करने से स्तन–वृद्धि होती है ॥ २६ ॥

अश्वगंधा बचा कुष्ठमांसी सर्षप संयुतम् ।
एतदुद्वर्तनं श्रेष्ठं स्थूलं भवति शाश्वतम् ॥२७

असगंध, वच, कूट जटामांसी, सरसों इनको जल में पीस नित्य उबटन करने से इन्द्री स्थूल होती है ॥ २७ ॥

अश्वगन्धा सुरावल्ली शूकं सर्षपमेव च ।
वृहती फल तोयेन लिग वृद्धिः प्रजायते ॥२८

असगन्ध, गिलोय, सिवार, सरसों इनको कटेरी के फल के स्वरस मर्दन कर लेप करने से इन्द्री–वृद्धि होती है ॥ २८ ॥

कुलिजं करवीरं च लांगुली चित्रकं तथा ।
अपामार्गवाजिगन्धं तिल तैलेन चूर्णितम् ॥२९
कर्णवर्द्धनमेतत्तु नारीणां च पयोधरौ ।
वाहूनांवर्द्धनं कुर्यात् लिङ्गानां चापि वर्द्धनम् ॥३०

चव्य, कन्नेर, कलिहारी, चीते की छाल, अपामार्ग, असगंध इनका चूर्ण कर तिल के तेल में मिलाकर व्यवहार करने से कान, स्तन, भुजा (बांह) तथा इन्द्री बढ़ती है ।३०।

तमालपत्रं तगरमुश्मत्यस्यापि पञ्चकम् ।
लेपेन शेफसोवृद्धिः स्तम्भनं चोष्ण वारिणा ॥३१

तमाखू के पत्ता, तगर, उश्मती का पञ्चांग ले गरम जल में पीस लेप करने से इन्द्री की वृद्धि और स्तंम्भन होता है । ।३१।

किमत्र चित्रं यदि वज्रवल्ली ।
वचाश्वगन्धा जलशूक पर्णम् ॥
हेमप्रकाशं वृहती फलंच ।
क्षणेन कुर्यान्मुशल प्रमाणम् ॥३२

बकुल, वच, असगन्ध, सिवार के पत्ता, नागकेशर, कटेरी का फल इनको जल में पीस लेप करने से क्षण में ही मूसल प्रमाण इन्द्री कड़ी और बड़ी होती है इसमें आश्चर्य ही क्या है ? ।३२।

गोशृङ्ग मूलं कनकस्य बीजं ।
वचाश्वगन्धा जलशूक चूर्णम् ।।
हेमाम्बु वर्णं बृहती फलंच ।
क्षणेन कुर्यान्मुशल प्रमाणम् ।।३३

गो के सींग की जड़, धतूरे के बीज, बच, असगन्ध, सिवार, हैमाम्बु (लताविशेष) कटेरी के फल इनको पानी में पीस लेप करने से क्षण में इन्द्री मूसल के समान हो जाती है ।३३।

इति श्री कुचिमारतन्त्रे श्री पं० रामप्रसाद मिश्र लहौसरा
वासिकृते भाषाटीकायां प्रथम पटल समाप्तः ।

अथ लेपनम्

कदम्ब वृक्ष पात्राणां सूक्ष्म चूर्णं तु कारयेत् ।
मधुनासह संयुक्तं लेपे स्यादुभयोःसुखम् ॥१

कदम्ब वृक्ष के पत्तों को बारीक पीस शहद में मिला लेप करने से स्त्री और पुरुष दोनों ही आनन्द को प्राप्त होते हैं ।१।

लवणं पिप्पलीमूलम् मधुकम् मधुसंयुतम् ।
कपित्थ रस सयुक्तं लेपेस्यादु भयोः सुखम् ॥२

सेंधानमक, पीपल मूल, महुआ इनके चूर्ण को शहद में और कैथ के रस में मिला लेप करने से दोनों आनन्द पाते हैं ।२।

स्वयंगुप्तस्यरोमाणि सैंधवं शर्करा मधु ।
लेपमेतत्प्रशसन्ति दम्पयोः प्रीतिवर्द्धनम् ॥३

कौंच की फली के रोम, सेंधानमक, खांड़ शहद इनको खरल कर लेप करने से स्त्री-पुरुष में प्रीति बढ़ती है ।३।

मधुना मधुकं चापियोषिदं जलकारिका ।
कुष्ठेन सह संयुक्तः लेपो हृदयतापनः ॥४

महुआ, हल्दी, कमल, कूट इनका चूर्ण कर शहद मिला लेप करने से कामोद्दीपन (बेचैनी) होता है ।४।

वचापाठा मधूच्छिष्ठं यदावकुचि कर्णिका ।
वृश्चिकालि समायुक्तो लेपोऽयं मरणान्तिकः ॥५

वच, पाठा, अवकुचिका, नागदोन इन सबको चूर्ण कर शहद में मिला लेप करने से अत्यानन्द मिलता है ।५।

यवा लोध्रमुशोरं च मञ्जिष्ठा गौर सर्षपम् ।
क्षौद्रेण सह संयुक्तो लेपोऽयं मरणान्तिकः ॥६

१—कौंच की फली के रोम से खुजली होती है अतः सावधानी से संग्रह करें । —सम्पादक ।

इन्द्र जौ, लोध, खस, मजीठ, सफेद सरसों के चूर्ण को शहद में मिला लेप करने से मरणान्त आनन्द मिलता है ।६।

ब्रह्मदण्डी मधुरसं पिप्पली मारिचानि च ।
वैशिकानामयं लेपः कुलस्त्रीणां न दापयेत् ॥७

ब्रह्मदण्डी, महुआ, पीपल छोटी, मिरच काली इनका चूर्ण शहद में मिला वेश्या स्त्री लेप करे कुलीन[1] स्त्री को लेप न करना चाहिये ।७।

मधुना बृश्चिका लेपः कपि शेफस्तु सर्पिषा ।
राजानुलेपना मानौ प्रद्युम्नेन प्रकीर्तितौ ॥८

"नमस्त्रिशूलिने कर्णाय ठ:ठः इति मन्त्रः" ॥

नागदोन का चूर्ण शहद के साथ अथवा बन्दर की इन्द्री घृत के साथ "नमस्त्रिशूलिने कर्णाय ठ:ठः" इस मन्त्र से अभिमन्त्रित कर लेप करे यह लेप राजाओं के योग्य है ।८।

मनुष्य दन्तं लवणं सैंधवं माक्षिकं तथा ।
मधुना सह संयुक्तो लेपोऽयं मरणांतिकः ॥९

श्यामायाश्चायं मन्त्रः

'अप्सराश्च विमानश्च ठ:ठः अष्टशतंपरिजप्य प्रयुञ्जीत ॥'

मनुष्य के दांत, सैंधा नमक, सोना मक्खी का चूर्ण कर शहद के साथ मिला श्यामा के लिये 'अप्पसराश्च विमानश्च ठ:ठः' इस मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित कर लेप करने से अत्यधिक आनन्द मिलता है अथवा यों कहिये कि मरणासन्न आनन्द प्राप्त होता है ।९।

पिप्पलीं तंडुलं चैव पुष्पाणि क्षुरकस्य च ।
वृहती फल संयुक्तो लेपोऽयं मरणान्तिकः ॥१०

पीपल छोटी; चावल, तालमखाने के फूल, कटेरी के फल इनका लेप मरणासन्न आनन्दवर्धक है ।१०।

---

[1] यह आनन्द-वर्धक और वन्ध्या बनाने वाला है । —सम्पादक ।

पिप्पली तंडुल लोध्रं शृङ्गिवेरं ममं तथा ।
तगरोत्पलगन्धाश्चतथा बाल्मीक मृत्तिका ।।११
अजन्यस्य कदम्बस्यपुष्पाणि च फलानिचः ।
क्षौद्रेण सह संयुक्तो लेपोऽयं मरणान्तिकः ।।१२

पीपल छोटी, चावल, लोध, अदरख, तगर, कमल के फूल, बमई की मिट्टी (सर्पस्थान् की मृत्तिका) अजन्य, कदम्ब के फूल तथा फल इनका चूर्ण कर मधु मिला लेप करने से मरणान्तक आनन्द मिलता है ।११-१२।

इति श्री कुचिमारतन्त्रे पं० रामप्रसाद मिश्र ल्होसरावासि कृते
भाषाटीकायां द्वितीय पटलः समाप्तः

वशीकरण बन्धनम्

देवसत्वा तु या नारी सामवर्णा सुरूपिणी ।
प्राच्यां शिरसि दातव्यं याभकाले विशेषतः ॥१
कृष्णा च मधुकं चैव कर्पूरं क्षौद्र नागरम् ।
पाटली रस संयुक्तं नारी हृदय वल्लभः ॥२

देवसत्व वाली स्त्री का वर्ण चन्द्रमा के समान और रूपवान् हो तो उनका शिर मैथुन समय पूर्व दिशा में अवश्य कर देना चाहिये तथा पीपल छोटी, मुलहठी, कपूर, सोंठ, शहद, पाटला के रस में घोट कर पुरुष इन्द्री पर लेप करें। इससे स्त्री का स्नेह—भाजन होता है ।१-२।

मुनिसत्वा तु नारी मातवृक्ष प्रभासिता ।
उदीच्यां मूर्घ्नि दातव्यं यामकाले विशेषतः ॥३
वार्ताकफल सारेण लवणस्य तु लेपनम् ।
मूलेद्वयंगुल मालिप्य शुष्के लिङ्गे यभेत्पुनः ॥४

मुनिसत्व वाली स्त्री की प्रभा, मात वृक्ष के समान हो तो उसका शिर मैथुन समय उत्तर दिशा में कर देना चाहिये तथा बेंगन के फल का सार और लवण इन दोनों का लेप लिंग की जड़ में दो अंगुल तक करे और शुष्क होने पर मैथुन करे ।३-४।

---

[1] मातवृक्ष के स्थान में "किंकुकेव" ऐसा पाठ कर दिया जाय तब ढाक के फुल के समान प्रभा वाली ऐसा अर्थ हो जाता है ।

— सम्पादक ।

गन्धर्वसत्वा या नारी पश्चिमे शिरसि यमेत् ।
क्षौद्रेण साञ्जनं पिष्ट्वा मत्स्य पित्तं चतुस्समम् ॥
आलिप्य मेढ्रं यभतां सुख स्यादुभयोस्तथा ॥५

गन्धर्व सत्व वाली स्त्री का शिर मैथुन समय पश्चिम दिशा में कर देना चाहिए तथा शहद, सुरमा सफेद, मछली (रेंगामाछी) का पित्त, सबको घोट कर इन्द्री पर लेप कर के विषय करने से स्त्री-पुरुष दोनों को आनन्द मिलता है ॥५॥

रक्षसत्वा तु या नारी मत्स्य मांसप्रिया शुभा ।
ऊर्ध्व केशीच रक्ताभा नैऋतं शिरसि यमेत् ॥६
सुरामांस प्रिया रौद्रा मुदितक्रूर भाषिणी ।
वराह मेदः क्षौद्राभ्यां+कलेन्मूलं प्रलिप्यच ॥७

राक्षस सत्व वाली स्त्री को मछली का मांस प्रिय हो तथा उसके केश ऊपर को हों और उसमें लाल वर्ण की आभा तथा सुरा (मद्य) मांस से प्रीति रखने वाली हो । भयङ्कर स्वरूप वाली मुस्कराती और कठोर बोलने वाली ऐसी स्त्री हो तो शिर नैऋत्य दिशा में मैथुन समय रक्खे तथा सूअर की चर्बी और शहद का इन्द्री पर लेप करे ॥७॥

भूतसत्वा च या नारी ह्रस्वजंघा महादरी ।
भक्ष्यभोज्य प्रिया नित्यमीशान्यांशिरसा यमेत् ।
अञ्जनं सैन्धवं पिष्ट्वा मधुना लिप्य मेहनम् ॥६

भूतसत्व वाली स्त्री की जांघें छोटी-छोटी होती हैं । पेट बड़ा होता है भक्ष्य[1] भोज्य[2] अधिक प्यारे लगते हों, ऐसी का शिर ईशान दिशा में कर मैथुन नित्य करे और सफेद सुरमा, सेंधा नमक, शहद में पीस इन्द्री पर लेप करे । ८–६ ।

+कलेत् के स्थान में पठेत् पाठ कर दिया जाय जब पाठ शुद्ध होता है ।
१. भक्ष्य लड्डू आदि २. भोज्य हलुआ आदि ।

नागसत्वा तु या नारी वायव्यां शिरसि यभेत् ।
नारिकेल धवाक्षीर शालिपिष्ट गुड़प्रिया ॥१०
कर्णिकारस्य निर्यास कर्पूरं केतकीरजः ।
केतकी पुष्परेणु च क्षौद्रं चापि समाचरेत् ॥
सुसंदत्वा यभेत्तां तु प्राची शिरसि संस्थिताम् ॥११

नाग सत्व वाली स्त्री को गोला, धवक का गोंद, चावल की पिट्ठी और गुड़ के बने पदार्थ प्यारे होते हैं। तब उसे मद्य (सुरा) पिलाकर उसका शिर मैथुन समय वायव्य दिशा अथवा पूर्व दिशा में रक्खे और कन्नेर का दूध, कपूर, केतकी का चूर्ण तथा केतकी के फूल की केशर को शहद में मिला कर दें। १०-११।

यक्षसत्वातु या नारी निर्लज्जा श्याम कोमली ।
मत्स्य मांस प्रिया नित्यं गन्ध पुष्पप्रिया भवेत् ॥१२
कर्पूर कुंकुमं कुष्ठं पिप्पली काम संयुतम् ।
रोचना क्षौद्रलिप्ताङ्गी नैऋत्यां शिरसिभेत् ।
आजन्म वास्यतांयाति सत्यमेतन्न संशयः ॥१३

यक्ष सत्व वाली स्त्री निर्लज्ज और श्याम वर्ण की तथा कोमल अङ्ग वाली हो और गन्ध पुष्प सदैव प्यारे लगते हों तो उसके गुह्य स्थान को कपूर, केशर, कूठ, पीपल, गोरोचन शहद इनसे लेप कर नैर्ऋत्य दिशा में शिर कर मैथुन करने से वह सदैव के लिये वशीभूत हो जाती है, इसमें सन्देह नहीं सत्य है।१४।

ॐ क्लीमेनामानय आनय वशतां ॐ ततो ब्रूयात् ।
तदनुचक्षंनम एतदयुतं जप्त्वादशांशतोजुहुयात् ॥१५
किंशुक कदम्ब कुसुमैः रात्रावेतां चरेतपुरुश्चर्याम् ।
आकर्षयति प्रमदां वशयतितांविह्वली भूताम् ॥१६

ओ३म् क्लीमेनामानय आनय वशतां, ओ३म् ततो ब्रूयात् तदनु

चक्षंनम इस मन्त्र को १ लाख बार जपे और दस हजार ढाक तथा कदम्ब के फूलों से रात्रि में हवन करे तो कामिनी स्त्री इस मन्त्र के प्रभाव से विह्वल होकर आती है और वशीभूत होती है।

ॐ ह्रीं नम इति चक्षंरात्रौ लक्षीकृतां पुरोध्यायन् ।
जप्त्वा योनौ हृदये ललाटदेशे च तां तूर्णम् ॥१७
द्रावयते चाकर्षयति वशयति तेषां फलं क्रमतः ।
ज्ञेयंसुधीभिरेतच्छत गुणः स्यात्स्मरः साक्षात् ॥१८

ओ३म् ह्रीनमः इस मन्त्र को रात्रि के समय १ लाख बार योनि का ध्यान करता हुआ जप करे तो स्त्री द्रवित हो जाती है। हृदय का ध्यान करे तो आकर्षण होता है। मस्तिष्क का ध्यान करने से वशीभूत हो जाती है। विद्वानों ने कहा है कि इस मन्त्र से कामेच्छा सतगुणी हो जाती है।

"ओं मद मद मादय-मादय हंसौ ह्लींरुपिणीं
स्वाहा" जप्त्वायुतं सहस्रं हुत्वा वशयेच्च कुसुमेन
ॐकार पूर्व मेतत्कुसुमान्यपि रक्त वर्णानि ॥१९

ॐ मद मद मादय मादय हंसौ ह्लीं रूपिणीं स्वाहा इस मन्त्र को १ लाख बार जप कर लाल वर्ण के फूलों की १ हजार आहुति से हवन करे तो स्त्री वशीभूत होती है।

"ओंहृल्लेखे मणिद्रवे कामरूपिणीं स्वाहा"
लक्षंदशांश होमस्तिलंःकृतः सिद्धिमावहति ॥२०
सूर्योदये तथास्ते जापात्साध्वीमपोन्द्राणीम्
वशयति किमुलोकानां वनितास्तास्तुस्वयंयान्ति ॥२१

"ॐ हृल्लेखे मणिद्रवे काम रूपिणीं स्वाहा" सूर्य उदय के समय तथा सूर्य अस्त के समय इस मन्त्र को १ लाख बार जप करे और दश हजार तिल

---

[1] ऐनाम् के स्थान में जिस स्त्री को वशीभूत करना हो उसका नाम उच्चारण करे—

आदि से होम में आहुति दे तब मन्त्र सिद्ध होता है। इस मन्त्र के प्रभाव से पतिव्रता इन्द्राणी भी वशीभूत हो जाती है। तो सांसारिक स्त्री वशीभूत हो इसमें आश्चर्य ही क्या है ?

"चामुंडे हुलु हुलु चुलु चुलु वशमानयामुकीं
स्वाहा" अभिमन्त्र्य सप्तवारं वशयति ताम्बूलदानेन

"ॐ चामुण्डे हुलु हुलु चुलु चुलु वश मानयामुकीं स्वाहा" इस मन्त्र से सात बार पान को अभिमन्त्रित कर स्त्री को देने से वशीभूत होती है।

चामुंडे जय जम्भे मोहयवश मानयामुकीं स्वाहा ।
दद्यात्पुष्पाणि पठन् यस्यै सा तद्वशं याति ।।

"चामुण्डे जय जम्भे मोहय वश मानयामुकीं[१] स्वाहा" इस मन्त्र को पढ़ता हुआ पुरुष स्त्री को पुष्प दे तो वह वशीभूत हो जाती है।

शवमाल्यं वातोत्थं ग्राह्यं पत्रादि वामहस्तेन ।
अस्थि मयूर चकोरकयोरपि सर्वविचूर्ण्य यस्यपदे ।।
यस्याः शिरसि चविकिरे दद्भुत मेतद्वशो करणम् ।।

आंधी के वेग से मुरदे की राख पत्ता आदि जो उड़ें उन्हें बांये हाथ से उठावे और मोर, चकोर की हड्डी का चूर्ण कर उस में मिला जिसके पैर के नीचे अथवा शिर में डाले वही वशीभूत हो जाती है।

गन्धक मनःशिलाभ्यां भूयः खण्डानि भावयेत्स्नुह्याः
पिष्ट्वा विशोष्य चैवं मधु युक्तोऽयं ध्वजालेपः ।
रमयन् वशयति कान्तां रक्तप्रभवा नरस्य विष्ठायुक्
यस्या शिरसिचविकिरेत् पृष्ठ तस्यैव सालगति ।।

गन्धक और मैंन्शिल को सेंहुड़ के दूध से बार-बार भावित करे सूखने पर पीस शहद में मिलाय इन्द्री पर लेप करे अथवा जो मनुष्य के रक्त में

---

१ अमुकी के साथ उस स्त्री का उच्चारण करे।

विष्ठा मिला रमण समय में पास रखता है उसके स्त्री वशीभूत हो जाती है और जिस स्त्री के शिर पर डालता है वह उसके पीछे लग जाती है।

गज नाशित नर हृदय जिह्वाद्दग्लिङ्ग नासिकामांसैः
रात्रौ पुष्य सुयोगे शिवालये मानुज कपाले।
साधित मेतत्कज्जल मबलायाःस्याद्वशी करणे
भक्षण पान स्पर्शन विधिषुसुविज्ञ स्समा युञ्ज्यात्॥

हाथी से मारे हुए मनुष्य के हृदय, जीभ, लिंग, आंख, नाक का मांस ले पुष्य नक्षत्र में रात्रि के समय शिवालय में मनुष्य के कपाल में काजल पारे। इस काजल का स्त्री पर खाने, पीने, अंजन में व्यवहार करे तो वह वशीभूत हो जाती है।

चटकोदरस्य मध्यान्निष्काश्यान्त्राणि तदुपरेवीर्यम् मूत्र चापि बिबध्यात्सकोरकेसंपुटी कुर्यात्।
चुल्ह्यां सप्त दिनानि विपचे त्तद्भस्म संसिद्धम् पानेऽथ भक्षणे वा दत्तं त्वरितं वशं नयते॥

चिड़िया के पेट से आंतें निकाल उसके पेट में वीर्य और मूत्र रख (आंतों से छेद बन्द कर) सराव सम्पुट में बन्द कर उस सराव को चूल्हे पर सात दिन अग्नि देने के पश्चात् उससे भस्म निकाल पान में देने से स्त्री वशीभूत की जाती है।

नन्दिकीटमथचूर्णयेद्बुधस्तत्रवीर्यमपिपातयेन्निजम्
गुंजिकामथविपिष्ययोजयेत्तेनतांवशमुपानयेद्ध्रुवम्।
भोजयेच्चयदिवापिपाययेत्मस्तकेऽथयदिवापिपातयेत्
अङ्गतेनविधिनानरः परांमोहयेदपिवशिष्ठकामिनीम्॥

नन्दि कीट का चूर्ण कर उसमें अपना वीर्य डाले इसे १ रत्ती देने से ही स्त्री वशीभूत हो जाती है। भोजन में पान में देने से तथा सिर में डालने से वशिष्ठ की अरुन्धती भी वशीभूत हो जाती है। साधारण स्त्रियों का तो

कहना ही क्या ?

सहदेवी पद्मदलं पुनर्नवासारि संयुक्तम् ।
साधित कल्कैः सिद्धं नयनांजनमद्भुतं वशकृत् ॥

सहदेवी, कमलपत्र, पुनर्नवा, सारि (लताविशेष) इनके कल्क से सिद्ध किया हुआ अंजन नेत्रों में लगाने से अद्भुत वशीकरण होता है ।

इति श्रीकुचिमार तन्त्रे पं० रामप्रसाद मिश्र ल्होसरा
वासिकृते भाषा टीकायां तृतीयःपटलः समाप्त ॥

अथ वाजीकरणम्

अथेदमभिधास्यमि वृष्यं विविध लक्षणम् ।
अति व्यायाम सत्वानां स्वभाव क्षीणरेतसाम् ।।
प्रमादादतिरिक्तस्य हीन शुक्रस्य सर्वदा ।
तन्निमित्तं भवेत्तस्माद्द्याद्वृष्यकरं स्वयम् ।।

अत्यन्त कसरत करने से, हीन मनुष्यों को तथा स्वभाव से नष्ट वीर्य वालों को, तथा प्रमाद में अधिक वीर्य नष्ट करने वालों को वीर्य हीन का, अब अनेक लक्षण युक्त वृष्य (वाजीकरण) प्रयोग को कहते हैं ।

स्वयंगुप्तां तिलान्माषान्बदरी शालिपिष्टकम् ।
अजाक्षीरेण संपेष्य घृते पूपलिकां पचेत् ।।
अंगुष्ठमात्रं तस्यास्तु भक्षयित्वा पयः पिवेत् ।
न च पद्भ्यां स्पृशेद्भूमिवृद्धो विशति वेगवान् ।।

कोंच के बीज, तिल, उड़द, बेर, साठी चावल की पिट्ठी सबको बकरी के दूध में पीस पूड़ी बना घृत में सेक ले और उसमें अंगुष्ठ प्रमाण खा ऊपर से दूध पीवे । पृथिवी का पैर से स्पर्श न करे इस से वृद्ध भी तरुण के समान मैथुन कर सकता है ।

इक्षुर गोक्षुरकस्य च मूलं ।
वानर रोमफलं तिलमाषाः ।।
चूर्ण मिदंपयसा सह लेह्यम् ।
यस्य गृहे प्रमदा शतमस्ति ।।

तालमखाने, गोखुरू, कोंच के बीज, तिल, उड़द इनके चूर्ण को दूध के साथ वह पुरुष सेवन करे जो घर में १०० स्त्रियों को रख सके ।

चूर्णं विदार्याः लवणं यवाः माषा स्तथैव च ।
सर्पि र्वाराहमेदश्च तिला लोहित शालयः ॥
एतैः पूपलिकां कृत्वा भक्षयित्वा पयः पिवेत् ।
सहस्रं याति कान्तानां सादरंप्रति वासरम् ॥

विदारीकंद का चूर्ण, सेंधा नमक, जौ, उड़द, तिल, सांठी चावल इनका चूर्ण कर पूड़ी बना घृत और सूअर की चरबी में सेक दूध के साथ सेवन करे तो प्रतिदित हजार स्त्रियों से रमण कर सकता है ।

उच्चिटामथ विदारि॰ामृतां ।
माष चूर्ण स्रविलां स शर्कराम् ।
योबरः पिबति दुग्ध मिश्रतम् ।
प्रत्यहं व्रजति योषितां शतम् ॥

मोथा, विदारीकंद, गिलोय, उड़द, खिरेटी, मिश्री इनको चूर्ण कर दूध के साथ सेवन करने से वाजीकरण होता है और १०० स्त्रियों से नित्य रमण कर सकता है ।

माषपिप्पलिशालीनां यव गोधूममेव च ।
सूक्ष्म चूर्ण कृतो लेहः घृते पूपलिकां पचेत् ॥
भक्षयित्वा पयः पीत्वाशर्करा मधु शर्करम् ।
शतश्च एक त्रिंशद्नक्तवारान्निरन्तरम् ॥

उड़द, पीपल, साठी चावल, जौ, गेहूँ इनका चूर्ण कर पूड़ी बना घृत में सेंके। मिश्री, शहद, दूध में मिला पूड़ी खा ऊपर से दूध पीवे तो १३१ बार मैथुन कर सकता है ।

बिदारि यवकं शालि स्वयंगुप्त फलानि च ।
यवाश्च सह गोधूमाः पिष्ट्वा क्षीरे विमिश्रयेत् ।।
शीतं मधुघृताक्तां तु भुक्त्वा भवति वीर्यवान् ।
भुक्तोपरि यदा जीर्णो तवा भवती मैथुनम् ।।

विदारीकंद, शूक धान्य, चावल, कोंच के बीज, जौ, गेहूँ इन सब को

पीस दूध में मांड़ बड़े बना घृत में सेक शहद में डुबो कर सेवन करे पाचन होने पर मैथुन करे यह प्रयोग वीर्य-वर्धक और वाजीकरण है।

वस्तेन्द्रो सिद्ध पयसि भावितानसकृत्तिलान्।
यः खादत्यसितान् गच्छे त्तस्य स्त्रीणांशतं सदा॥

बकरे की इन्द्री को दूध में औटा कर उस दूध की काले तिलों में भावना लगाकर जो खाता है वह शत स्त्री भोगी हो जाता है।

वृषण क्षीरसर्पियभ्यां पक्वमांसंतु भक्षयेत्।
मधुमांसरसं पीत्वा शतवेगं स गच्छति॥

बकरे के अण्डकोष को दूध घी के साथ और पके मांस का सेवन करे तथा शहद और मांस रस सोरुआ को पीवे तो मनुष्य शत स्त्री भोगी हो जाता है। अर्थात् सौ बार मैथुन कर सकता है।

वस्तान्ड सिद्धक्षीरेतु भाविता नसकृत्तिलान्।
अद्याच्च पयसा चूर्णमबला शतवल्लभः॥

बकरे के अण्डकोष को दूध में डाल औटावे और उस दूध की तिलों में भावना दे शुष्क होने पर चूर्ण कर दूध के साथ फांके तो शत (सौ) स्त्रियों का प्यारा हो जाता है।

कृष्णा सैन्धव संयुक्तं वस्तान्ड घृत संयुतम्।
भक्षयित्वा पयः पीत्वा पूर्वोक्तं मधुना सह॥

पीपल छोटी, सेंधा नमक, बकरे के अण्डकोष इनको घृत में मिला सेवन करे ऊपर से दूध शहद मिला पीवे तो शत स्त्रियों का प्यारा हो जाता है।

अश्वगन्धस्य मूलानि गवांक्षीरेण नित्यशः।
पीत्वा च सम्यगेतन्तु वृद्धो षोडश वेगवान्॥

असगन्ध की जड़ का चूर्ण गौ के दूध के साथ नित्य सेवन करने से वृद्ध पुरुष भी युवा पुरुष के समान वेगवान हो जाता है।

आमलक्या विदार्याश्चचूर्णं स्वरस भावितम्।
शर्करा क्षीर सर्पिभ्यां प्राश्य सुक्षीर माचरेत् ॥१५

आमले और विदारीकन्द का चूर्ण इनके ही स्वरस में भावना लगा, मिश्री घृत में मिलाकर सेवन करे, ऊपर से दूध पीवे तो वाजीकरण हो।

स्वयंगुप्तस्य बीजानि तथा गोक्षुर कस्य च।
चूर्णद्वयं पिबेत्साद्धं पयसा शर्कराऽन्वितम् ॥१९

कोंच के बीज और गोखुरू इन दोनों का चूर्ण कर मिश्री मिला, दूध के साथ करने से वाजीकरण होता है।

आमलक्या रसे चूर्णं माषानां प्रक्षिपेन्नरः।
अतीते सप्तरात्रेतु शर्करा मधु संयुतम् ॥२०

आमले स्वरस में उड़द का चूर्ण मिला सात दिन रक्खा रहने दें पश्चात् मिश्री मिले दूध के साथ सेवन से वाजीकरण होता है।

विदार्या श्चूर्णमसकृत्स्परसेनैव भावितम्।
स्वगुप्त माषसंयुक्तं घृते पूपलिकां पचेत् ॥२३

बिदारीकन्द का चूर्ण ले बिदारीकन्द के स्वरस की भावना लगावे पश्चात् कोंच के बीज और उड़द का चूर्ण कर पूड़ी बना घृत में सेंके तो इसके सेवन से वाजीकरण हो। २३

माष चूर्ण पलं चैव मधुना सह सर्पिषा।
अनुपानं पयः पीत्वा वृद्धः षोडशगोभवेत् ॥२४

उड़द का चूर्ण ४ तोले मधु और घृत के साथ मिला सेवन करे और ऊपर से दूध पीवे तो वृद्ध पुरुष भी १६ स्त्रियों से मैथुन कर सकता है।

मधुना सर्पिषा युक्तं मधुकं सकले समम्।
लीढ्वा निपीय तत्पश्चात् पयः पीत्वा शतं व्रजेत्

शहद, घी के साथ मुलहठी, गंदेलघास के चूर्ण को चाटे और ऊपर से दूध पीवे तो शत स्त्रियों से रमण कर सकता है ।

स्वर्णमाक्षिक लोह च पारदश्च शिलाजतुः ।
पथ्या विड़ङ्ग धत्तूर विजया जाति पत्रिकाः ॥२६
अश्वगन्धा गोक्षुराणामर्कैर्भाव्यं पृथक् पृथक् ।
सप्तघस्त्रं तु वल्लैकंमध्वाज्याभ्यां लिहेत् च ॥२७

स्वर्ण माक्षिक भस्म, लोह भस्म, पारद[1] शिलाजीत, हरड़, बायविडंग, धतूरे के बीज, भांग, जावित्री, इन सबका चूर्ण कर असगन्ध, गोखरू आक इन तीनों के स्वरस की प्रथक् प्रथक् भावना दे ओर दो-दो रत्ती शहद और घी के साथ सात दिन तक सेवन करे तो बाजीकरण हो ।

वस्तांड साधिते दुग्धे तिलान्कृष्णा न्विभावयेत् ।
शतावरं भावनास्यात् शतसंख्याः व्रजेत् स्त्रियाः ॥
अनुपानं सिता दुग्धं केवलैव सिताथवा ।
स्तम्भनं वृष्यकं चैतत्सुख सन्तान कारकम् ॥

बकरे के अण्डकोष के साथ सिद्ध किए हुए दूध से काले तिलों को भावित करे और मिश्री मिला के दूध के साथ सेवन करे । यह प्रयोग स्तम्भन और बाजीकरण तथा सन्तान को देने वाला है ।

विदारिका गोक्षुरसं सिताज्यं मधु संयुतम् ।
लीढ्वा निपीय दुग्धं च नारीणां शतमावहेत् ॥३०

विदारीकन्द और गोखुरू के रस में मिश्री घृत, शहद मिलाकर चाटें ऊपर से दूध पीवें तो शतस्त्रियों से मैथुन कर सकता है ।

---

[1] पारद के स्थान में रस सिंदूर लेना चाहिए ।

स्वरसेन धात्री चूर्णं वहुवारं विभावयेत् ।
सिताज्यं मधु संयुक्तं पयः पीत्वा शतंव्रजेत् ।३१
इदं महार्धं स्त्रैणानां विहारार्थं मुदाहृतम् ।
नराणा मल्प शुक्राणां खिन्नानांच प्रजार्थिनाम् ॥

आमले के चूर्ण में आमले के रस की अनेक भावना दे[१] चूर्ण बनावे । मिश्री, घृत, शहद के साथ चाट ऊपर से दूध पीकर १०० स्त्रियों से मैथुन करने को समर्थ होता है । यह अमूल्य प्रयोग स्त्री-अधीन पुरुषों के लिए कहा गया है ।

इति कुचमार तन्त्रे पं० रामप्रसाद मिश्र ल्होसरा वासी कृते
भाषा टीकायांचतुर्थः पटलः समाप्तः ॥

१ शतवार भावना दे तो शतस्त्रियों से मैथुन कर सकता है ।

अथ द्रावणम्

कर्पूरं टङ्कणं चापि भवबीज समन्वितम् ।
मधुना लिंग लेपोऽयं तरुणीं द्रावयेत्द्रुतम् ॥

कपूर, सुहागा, पारद, इनको मधु में मर्दन कर इन्द्री पर लेप कर मैथुन करने से तरुण स्त्री शीघ्र ही द्रवित हो जाती है ।

केवलं टङ्कणं चापि नारी द्रावणमद्रुतम् ।
चिञ्चा मधु समायुक्ता गुड़ युक्ताऽथवात्रयम् ॥
द्रावणे परमो योगो नारी सौख्य प्रदायकम् ॥

केवल सुहागा भी स्त्री को द्रावण करता है । वृक्षाम्ल (इमली) को शहत के साथ अथवा गुड़ के साथ अथवा इमली शहद और गुड़ इन तीनों का लेप करने से स्त्री (स्खलित) होती है और सुखप्रद है ।

पिप्पली मधु धत्तूरं लोध्रं मरिचमेव च ।
रजसो द्रावणे योगो नारी गर्भ विनाशकः ॥

पीपल छोटी, शहद, धतूरे के बीज, लोध, मिर्चकाली इनके चूर्ण को सेवन करने से रजस्राव होता है और गर्भ नष्ट हो जाता है ।

रक्तवानर लिंगं च पारदं क्षौद्र मेव च ।
लेपोऽयंकामिनीनांच सौख्य प्रीतिकरः परः ॥

लाल बन्दर की इन्द्री, पारद इनको पीस इन्द्री पर लेप कर मैथुन करने से स्त्रियों को सुख मिलता है । तथा स्त्रियों का प्यारा होता है ।

सैन्धवं मधु संयुक्तं पारावत मलान्वितम् ।
रजसो द्रावणे योगो मुनिभिः परिकीर्त्तितः ॥

सेंधा नमक, शहत, कबूतर की बीट इनके सेवन से रजस्राव (मासिक धर्म) होता है । यह योग मुनियों ने कहा है ।

अथ स्तम्भनम्

— ** —

पद्मकिंजल्क संयुक्तां घृतक्षौद्र समन्विताम् ।
सहदेवींच संपेष्य नाभौधृत्वा शतं व्रजेत् ॥

कमल केशर, सहदेवी, घृत, शहत, इन सबको पीस नाभि लेप करने से शत स्त्रियो के लिए स्तम्मन होता है ।

सित शरपुङ्खामूल व्रटपयसा पिष्ट मानने निहितम्
एक करंजक बीजाऽभ्यंतरगंस्तम्भयेद्वीजम् ॥

सफेद सरफोंका के मूल को बकरी के दूध में पीसकर एक कंजा की मींग निकाल उसमें इसे भर दे उसे मुख में रख मैथुन करे तो स्तम्मन हो ।

सित शरपुङ्खा मूलं पारदरस सहित मानने निहितम्
एक करंजक बीजान्तस्थं व्रीजं विधारयेत ॥

सफेद सरफोंका की जड़ व पारद दोनों को मर्दन कर कजा की मींग निकाल उसमें इसे भर मुख में रक्खे तो स्तम्भन होता है ।

नरदक्षिण हस्तोत्थैरिभ शुण्ड समुद्भवैः
करभाश्ववु पुच्छ संजात रोमिभिः कोल दंष्ट्रकम्
ग्रथित्वा धारयेत् हस्ते क्षणं वीर्य्यं नमुञ्चति ॥

मनुष्य के सीधे हाथ के बाल, हाथी के सूड़ के बाल, हाथी-बच्चा की पूंछ के बाल, घोड़ा की पूंछ के बाल, सूअर की डाढ़ इन सबको गूंथकर सीधे हाथ में बांधने से स्तम्मन होता है । क्षण भर वीर्य नहीं छुटता ।

सप्तपर्णस्य बीजंवा मुखे घृत्वा यथासुखम् ।
रममाणे रेतसश्च स्तम्भं धत्ते घटोद्वयम ॥

सतोना के बीज मुख में रखने से वीर्य २ घीड़ी पर्यन्त स्खलित नहीं होता ।

स्नुही दुग्धे तथा छागी दुग्धे लज्जालु मूलकम् ।
विमर्द्य पादे बिलिपेत् वीर्यंच्यावं जयेदसौ ।।

सेंहुड़ का दूध अथवा बकरी के दूध के साथ लज्जालू की जड़ को पीस पैर के तलुओं में लेप करे तो वीर्यपात नहीं होता ।

अथवा वारुणी मूलं पेषयेदजमूत्र के ।
ध्वजा लेपेन सम्भुक्त्वा वीर्यच्यावं जयेदसौ ।।

वरना की जड़ को बकरा के मूत्र में पीस इन्द्री पर लेपकर मैथुन करने से वीर्यस्राव नहीं होता ।

तैलं पुनर्नवा चूर्णैः सिद्धं कौसुम्भमेवच ।
ध्वजां वा चरणं वापि मर्दयन्न क्षणं च्यवेत् ।।

साँठ के चूर्ण से अथवा कसूम से तैल सिद्ध[1] करले और उस तेल को इन्द्री पर व पैरों पर मर्दन कर मैथुन करने से वीर्यपात नहीं होता ।

सहदेवी मधु तिल माहिषी घृतसंयुतम् ।
सित पङ्कज किंजल्कं चटकांडेन मर्दयेत् ।।
नाभिले पनतो वापपद लेपाबथापिवा ।
रममाणःशतं नारी वीर्यं धत्ते नरश्चिरम् ।।

सहदेवी (पीत पुष्पी) शहद, तिल, भैंस का घृत, सफेद कमल की केशर, चिड़िया का अण्डा इन सबको पीस नाभि (टूंडी) और पैर के तलवों पर लेप कर शत स्त्रियों से मैथुन करने पर भी वीर्यपात नहीं होता।

इति श्री कुचिमार तन्त्रे पं० रामप्रसाद मिश्र ल्होसरा वासिकृते
भाषा टीकायां पंचमः पटलः समाप्तः ।।

---

[1] तेल से चौथाई सांठ को ले पानी में लुगदी बनावे और तेल से चौगुना सांठ-क्वाथ ले मन्द-मन्द अग्नि से पकावे जब तैल मात्र रहे तब सिद्ध हुआ जाने (सांठ से अठगुना पानी डाल औटावे और जब चतुर्थांश रहे तब छान ले यही क्वाथ हुआ) —प्रकाशक ।

अथ कन्या करणम्

--*

मधुमनश्शिला वापि श्वेतानि मरिचानिच ।
कुष्ठ मत्स्यस्य पित्तं च तथा सौराष्ट्र लोचनम् ।।
कोकिलस्य च बोजानि कपित्थं मूल मेवच ।
घृतेन योनि मालिम्पेत् कन्या करण मुत्तमम् ।।

शहद, मैनशिल, सफेद मिर्च, कूठ, मछली का पित्ता, कुंदरू गोंद, गोलोचन, ताल मखाने, कैथ की जड़, समान भाग ले चूर्ण कर घृत मिला लेप करने से (कन्या समान) भग संकोच होता है ।

गोश्रृङ्गमजश्रृङ्गं च मनोह्वा च समन्वितम् ।
हारिद्रेण जले लिप्त भर्त्तृ तृप्तिकरं भवेत् ।।

गौ का सींग, बकरी का सींग, मनसिल, समान भाग ले हल्दी के रस में पीस, योनि पर लेप कर स्त्री पुरुष-संग करे तो पति को सन्तुष्ट करती है ।

लोध्रं कुमुद कन्दं च कोकिला हेम माक्षिकम् ।
वर्त्तिवत् लेपयेद्योनौ सुगन्धिः कन्यका भवेत् ।।

लोध्र, लाल कमल की जड़, काकोली, स्वर्ण माक्षिक (सोना मक्खी) इन सबको पीस योनि पर लेप कर या बत्ती बना चढ़ावे तो योनि-संकोच (कन्या समान योनि) हो तथा सुगन्धित हो ।

लोध्र कार्पास पत्रं च बदरी बीजमेवच ।
हरिद्रे मधुना लिप्य कन्या भवति नित्यशः ।।

लोध्र, कपास के पत्ता, बेर की गुठली की मींग, हल्दी, दारु हल्दी, इनका चूर्ण कर शहद मिला लेप करने से योनि-संकोच होता है ।

कृष्ण निर्गुण्डि पुष्पाणामम्बु तैलेन बुद्धिमान् ।
श्वेतलाक्षा रसं ग्राह्यं चतुः प्रस्थ सुशोभितम् ॥
क्वाथयेन्मतिमान् सम्यक् प्रस्थनिर्गुण्डि सम्भवम् ।
चतुर्भागावशिष्टं तु कषाय परिमाणतः ॥
समशोष्य तिलान् कृष्णान् भावयित्वा तु तद्रसम् ।
प्रतिगृह्य तिला भक्ष्या त्रिदिनेनैव भक्षयेत् ॥

काली निर्गुण्डि (मेंमड़ी) के फुल का रस और तैल, सफेद लाख का रस ४ प्रस्थ ले पाचन करे चतुर्थांश शेष रहने पर तिलों में भावना दे शुष्क होने पर तीन दिन भक्षण करे तो संकोचन हो ।

कपिला घृत सम तैलंपूर्वोक्तेनैव भावितम् ।
योनि मध्ये च दातव्यं सममेक तिली कृतम्
कन्या करण मत्यंतं योनि शौच मनामयम् ॥

गौ का घृत, तिलतैल समान भाग ले पूर्वोक्त से भावना दे खरल कर योनि-मध्य में रक्खे तो योनि-संकोच हो ।

रसोभूपीलु मूलश्च पिप्पली तंडुलं तथा ।
एवं लेपः प्रयोक्तव्यो नारीणां चित्त हारकः ॥

पीलू की जड़ का रस, पीपल, चावल इनको पीस लेप करने से स्त्रियों का मन प्रसन्न होता है ।

पित्तं तु काकविष्ठाच श्वानशेफ स्तथैवच ।
स्वयं गुप्तफलं चैव मूलकं तरुतस्त्वचः ॥
त्रिफलां नागरं चैव लोध्रं च समभागशः ।
किंचित्कटुक रोहिण्या मधुनासह योजयेत् ॥

कौआ का पित्ता तथा कौआ की बीट, कुत्ता की इन्द्री, कौंच के बीज, मूली का बक्कुल, त्रिफला, सोंठ, लोध, समान भाग ले थोड़ी कुटकी और शहद मिला लेप करने से योनि-संकोचन हो ।

नागरस्य च कपोत पुरीष ।
कुष्ठ मंजन वचा हरितालम् ॥१३
लेपयेच्च मधु सैन्धव युक्तम् ।
शोषये दिति गतावपि रम्भाम् ॥१४

सोंठ, कबूतर की वीट, कुठ, सुरमा, वच, हरिताल सेंधा नमक इनको समान भाग ले चूर्ण कर शहद के साथ लेप करने से वृद्धा की योनि शुष्क हो जाती है। १३-१४

इति श्री कुचिमार तन्त्रे पं० रामप्रसाद मिश्र ल्हौसरा
वासिकृते भाषाटीकायां षष्ठः पटलः
समाप्तः ॥

अथ वन्ध्या करणम्

—:०:—

सेंहुंड दुग्धमादाय भाल देशे विलेपयेत् ।
अपूर्ण मथवा पूर्णं क्षणाद् गर्भं विमुञ्चति ॥१
नक्लेशो नापि संदेहो न रोगादि भयं क्वचित् ।
नवा प्रसव दुःखादि नवा हानि विधायकम् ॥२
गृहस्थानां सुखकरो योगोऽयमति दुर्लभः ।
कुचिमारेण मुनिना कृपया परिकीर्त्तितः ॥३

सेंहुड़ के दूध को स्त्री के मस्तक पर लेप करने से पूरा अथवा अधूरा गर्भ क्षणमात्र में पतित हो जाता है। इस प्रयोग से कष्ट नहीं होता। मोह और रोग आदि का भय भी नहीं होता तथा प्रसव की पीड़ा नहीं होती और न कुछ हानिकारक ही है। गृहस्थ को सुख देने वाला अत्यन्त दुर्लभ यह रोग कुचिमार मुनि ने कहा है। १-२-३

कटुतुम्बी बीजयुतां नीरेण सहपेषयेत् ।
योनौ प्रलेप मात्रेण क्षणाद्गर्भं विमुञ्चति ॥४

कड़वी तोंबी को बीजों सहित ले जल में पीस योनि पर लेप करने से क्षण भर में गर्भपात हो जाता है। ४

वातुकस्य च बीजानि कर्षमात्र प्रमाणतः ।
गृहीत्वा सेटकार्द्धेन जलेन सह संपचेत्
अर्द्धाव शेषे तु पिबेद्गर्भपातो भवेद्ध्रुवम् ॥५

बथुआ के बीज १ तोला ले आध सेर जल में औटावे जब पाव सेर रहे तब छानकर पीने से निश्चय गर्भपात हो जाता है। ५

आरण्यक कपोतस्य विष्ठा गृञ्जन बीजकम् ।
योनौ तद्धूम दानेन गर्भपातो भवेद्ध्रुवम् ।। ६

जङ्गली कबूतर की बीट, गाजर के बीज दोनों को मिला योनि-मार्ग में धुआं देने से निश्चय गर्भपात होता है । ६

उष्ट्रकण्टक मूलंतु उदरे परिलेपयेत् ।
घोटकस्य च विष्टाया धूमाद्गर्भं विमुञ्चति ।। ७

ऊंट कटेरा की जड़ को पीस पेट पर लेप करे तथा घोड़ा की लीद से योनि को धुंआ दे तो अवश्य गर्भपात हो जाता है । ७

कर्ष मात्रं समादाय सोरं कलम संज्ञकम् ।
भक्षयेत्पयसा सार्द्धं गर्भपातो भवेद्ध्रुवम् ।। ८

एक तोला कलमी सोरा दूध के साथ फांकने से गर्भपात होता है । ८

सेहुण्डकं समादाय छाया शुष्कंतु कारयेत् ।
प्रदाह्य बह्निना तञ्च कर्षमात्रं च नित्यशः ।। ९
एक विंशत्यहान्ये तद्भक्षयेन्मधुना सह ।
आजन्म वन्ध्या भवति रोग क्लेश विवर्जिता ।। १०

सेंहुड़ को छाया में सुखा और जला कर भस्म बनावे और भस्म को १ तोला शहद के साथ चाटें । २१ दिन चाटने से स्त्री जन्म पर्यन्त वन्ध्या हो जाती है और रोग-क्लेश रहित हो जाती है । ९-१०

हस्ति विष्ठा जलं ग्राह्यं कर्षमात्रं प्रमाणतः ।
दिनानि सप्त मधुना पिवेद्वन्ध्यत्व सिद्धये ।। ११

हाथी के लेंडा को निचोड़कर १ तोला ले शहद मिला सेवन करे तो स्त्री वन्ध्या हो जाती है । ११

हारिद्र ग्रन्थि मेकैकं प्रत्यहं भक्षयेद्यदि ।
रजोधर्म समायुक्ता वन्ध्या षड्भिर्दिनैर्भवेत् ।। १२
दिनत्रयं रजोधर्मे त्रिदिनं च ततः परम् ।
एवं षट्सु दिनेष्वेत दद्याद्वन्ध्यत्व सिद्धये ।। १३

रजोधर्म वाली स्त्री यदि रजोधर्म के ३ दिन और तीन दिन बाद तक अर्थात् ६ दिन नित्य एक-एक हल्दी की गाठ का सेवन करे तो अवश्य वन्ध्यता को प्राप्त हो जाती है। १२-१३

कालाजीरीं च कच्चूरं नागकेशर संयुतम्।
हरीतकं कलौजींच क्षिपेत्कायफलं तथा॥ १४
जलेन भावयन्कुर्या द्वटिकां वदरोपमाम्।
रजोधर्म निवृत्तौ च भक्षयेत्पयसा समम्॥ १५
प्रत्यहं गुटिका मेकामेवं सप्ताह माचरेत्।
वन्ध्यत्व प्राप्तये योगो मुनिभिः परिकीर्तितः॥१६

काली जीरी, कचूर, नागकेशर, हरड़, कलौंजी, कायफल सबको कूट कपड़ छानकर जल में घोट बेर के बराबर गोली बनावें। मासिक–धर्म के बाद दूध के साथ एक-एक गोली प्रातः सायं सात दिन तक सेवन करे यह योग मुनीश्वरों ने वन्ध्या करने के लिए कहा है। १४, १५, १६,

त्रैवार्षिकं पलमितं मासार्द्धं भक्षयेद्गुड़म्।
यावज्जीवंभवेद्वन्ध्या नात्रकापि विचारणा॥ १७

प्रति दिन चार तोले तीन वर्ष का पुराना गुड़ १५ दिन बराबर सेवन करने से जब तक जीवे तब तक वन्ध्या रहे। इसमें कुछ सन्देह नहीं। १७

सर्षपं मंडलं चैव शर्करा सकलं समम्।
पयसा तांडुलेनैतद्भूक्तं पुष्पं विनाशयेत्॥ १८

सरसों, चावल, समान भाग और सबके बराबर खांड़ मिला दूध के साथ सेवन करने से रजोधर्म नष्ट हो जाता है। १८

तुषतोयेन संक्वाथ्य मूलमग्नि तरूद्भवम्।
पुष्यान्ते त्रिदिनं पीतं वन्ध्यत्वं नयते ध्रुवम्॥१९

चीते की जड़ की छाल का कांजी में क्वाथ कर रजोधर्म के बाद ३ दिन पीने से निश्चय वन्ध्या होती है। १९

इति श्री कुचिमार तन्त्रे पं. रामप्रसाद मिश्र ल्हौसरा वासिकृते भाषाटीकायां सप्तमः पटलः समाप्तः।

अथ लोमशातनम्

सार्षपं तैल मादाय नाग चूर्णं क्षिपेत्ततः ।
सप्ताह मातवे धृत्वा साधयेल्लोमशातने ॥१

सरसों के तेल में बच्छनाग के चूर्ण को डालकर ७ दिन धूप में रखें पश्चात् बालों पर लगाने से वह उड़ जाते हैं । १

शङ्खभस्म समादाय सप्ताहं कदली रसैः ॥
भावयित्वा समं तत्र हरितालं विनिक्षिपेत् ॥
लोमाऽहरणं चैतन्मुनि राजेन कीर्त्तितम् ॥ २

शंख भस्म में ७ दिन तक कदली के रस की भावना दे । पाश्चत् शंख भस्म के बराबर हरिताल मिलावें । यह प्रयोग मुनिराज ने बाल उड़ाने के लिए कहा है । २

पलाश भस्म तालं च रम्भा रस विभावितम् ।
लेपाल्लोमानि नश्यन्ति स्थानं याति घृतोपमम् ॥३

ढाक की भस्म और हरिताल में केला के रस की भावना दे लेप करने से बाल उड़ जाते हैं और वह स्थान घृत के समान चिकना हो जाता है । ३

प्रथमं दूरतःकुर्याल्लोमं तु यथातथा ।
ततोनु मर्द येत्तत्र तैलं बरर संज्ञकम् ॥४
वटक्षीरं पुनस्तत्र लेपयेत्सु विचक्षणः ।
आजन्म तत्र लोमानि न रोहन्ति कदाचन ॥ ५

पहले बालों को उस्तरा से साफ कर "बरर" नाम का तेल मले और उस स्थान पर बकरी के दूध का लेप करने से जन्म पर्यन्त बाल नहीं लगते हैं । ४-५

अथ प्रसवः

रौप्यकाञ्चन ताम्राणां भस्म क्षौद्र समन्वितम् ।
पुष्पान्ते त्रिदिनैरेव लीढं क्षेत्रं विशोधयेत् ॥ १

चांदी की भस्म, स्वर्ण भस्म, ताम्र भस्म इनको शहद में मिला रजो धर्म के बाद स्नान कर सेवन करने से ही गर्भाशय शुद्ध होता है । १

नागकेशर चूर्णं च स्नानान्ते त्रिदिनं पिवेत् ।
पयोभुग्भर्तृ संयोगे गर्भं धत्ते ततोद्ध्रुवम् ॥ २

नागकेशर के चूर्ण को रजोधर्म स्नान के बाद तीन दिन तक दूध के साथ पीने से तथा पति के साथ मैथुन करने से अवश्य गर्भ रहता है । २

अमृता बाजिगन्धाद्रं क्वाथं सप्तदिनं पिवेत् ।
पतियोग समापन्ना गर्भं सा प्राप्नु याद्ध्रुवम् ॥ ३

गिलोय, असगन्ध दोनों को समान भाग और हरी ले क्वाथ कर पीवे । इस प्रकार सात दिन पीने के बाद पति संयोग कर अवश्य गर्भवती होती है । ३

पुष्योद्धृत लक्ष्मणाया मूलं घृत समन्वितम् ।
मासावधि तुया भुङ्क्ते गर्भं सा लभतेद्ध्रुवम् ॥ ४

पुष्य नक्षत्र में लक्ष्मणा की जड़ को पीस घृत के साथ प्रतिदिन एक महीना तक पीने से निश्चय गर्भ रहता है । ४

इति श्री कुचिमार तन्त्रे पं० रामप्रसाद मिश्र
ल्हौसरावासि कृते भाषा टीकायां अष्टमः पटलः
समाप्तः ॥

अथ परिशिष्टम्

१. लोम नाशनम्-

हरिताल ताल बीज सिंधुर घननाद कंदलीक्षार:
इक्ष्वाकुबीज कुनटी, बचा स्नुही मूल मञ्जिष्ठा:
वरुण गिरिकर्णिके च स्नुही क्षीरेण सप्तधासिक्ते
सिक्तेक्ष्वाकुरसैरथ सम्पिष्ट्वा कल्पयेत् कल्कम् २
तत् कल्कार्द्ध तैलं कन्दलिकाबहुल वारिणा पक्त्वा
रोमोत्पाटन पूर्वं कुरु लेपं तेन तैलेन । ३

हरिताल, ताल के बीज[1], मेंमड़ी, वायविडङ्ग, कमल गट्टा, यवक्षार, कड़वी तोंबी के बीज, मन्शिल, बच, थूहर की जड़, मजीठ, बरना, अपराजिता (कोयल) इन सबको कपड़ छानकर थूहर के दूध की ७ भावना दें, फिर कड़वी तोम्बी के रस में पीस कल्क (लुगदी) बनालें। उस कल्क से आधा तेल ले कमलगट्टा और सफेद मिर्च के जल के साथ पका कर रक्खें। इसके लगाने से बाल उड़ जाते हैं।

गोरेकं वर्ण भाज: पयसावन्ध्यापि धारयेद्गर्भम् ।
पीत्वा केकि शिखाया: पुत्रञ्जीवस्य वा मूलम् ॥ ४

मयूर शिखा की जड़ को तथा जीवक की जड़ को चूर्ण कर एक वर्ण वाली गौ के दूध के साथ पीने से बन्ध्या भी गर्भ को धारण करती है। ४

पीत्वाऽमुनैव पयसा
रजसि स्नाता च लक्ष्मणा मूलम् ।
सप्तक्षालित शाली
भक्तं भुक्त्वा सुतं लभते ॥ ५

---

[1]ताल बीज—ताड़ बृक्ष के फल के बीज —प्रकाशक

रज: स्नान के बाद जो स्त्री लक्ष्मणा (सफेद कटेरी) की जड़ को एक रग वाली गौ के दूध के साथ पीती है तथा सात प्रकार के जल[२] से धोये हुए साठी के भात को खाती है उसको पुत्र-प्राप्ति होती है। ५

गौ चंदन दण्डोत्पल विष्णुक्रांता कृताञ्जलीचूर्णम्।
रजसि स्नाता पीत्वा गर्भवहेत् वन्ध्याऽपि ॥ ६

गोपी चन्दन, नील कमल, कोयल, लज्जालु इनके चूर्ण को रजो धर्म स्नान के बाद दूध के साथ पीने से वन्ध्या भी गर्भ धारण करती है। ६

इति श्री कुचिमार तन्त्रे पं० रामप्रसाद मिश्र
ल्हौसरावासि कृते भाषाटीकायां परिशिष्ट भाग:

---

१. बेरियम सल्फाइट नामक अंग्रेजी औषधि ५ तोला ले पावभर पानी को खूब गरम कर उसमें मिलावें, शीशी में भर दें। ५ घण्टे बाद पीतवर्ण का जो जल है उसे नितार रख लें इसके लगाने से ५ मिनट में बाल उड़ जाते हैं।
—प्रकाशक

२ सात प्रकार का जल—१. नदी का, २. झरने का, ३. कुकोरा, ४. तालाब का, ५. बावली का, ६. सर का, ७. औद्भिज।
—प्रकाशक

समाप्त

नपुंसकता, मधुमेह, स्वप्न-दोष नाशक

स्तम्भन-शक्ति बढ़ाने वाले और वाजीकरण

सफल प्रयोग

कुचिमारतन्त्र के प्रथम संस्करण के सम्पूर्ण छप जाने के पश्चात् इस पुस्तक को और अधिक उपयोगी बनाने के लिए हमको यह आवश्यक जान पड़ा कि इसके अन्त में वाजीकरण तथा नपुंसकता एवं वीर्य-विकार नाशक सफल प्रयोगों का एक छोटा संग्रह भी प्रकाशित कर दिया जाय। इसी भावना से यहां कुछ प्रयोग प्रकाशित किये जा रहे हैं। ये प्रयोग 'धन्वन्तरि' में यत्र-तत्र प्रकाशित हो चुके हैं। हमने कुछ रोगियों को सफलतापूर्वक सेवन कराये हैं। सरल तथा आशुफलप्रद प्रयोग हैं, आशा है पाठक इन प्रयोगों से अवश्य लाभ उठा सकेंगे। यह प्रयोग-संग्रह मात्र ही इस पुस्तक के मूल्य से कहीं अधिक उपयोगी प्रमाणित होगा, यह हमारा विश्वास है।

वाजीकरण प्रयोग

सस्ता व उत्तम

आंवला चूर्ण	६ तोला
सत्व गिलोय	गोखरू
वंशलोचन	श्वेत इलायची

चारों १-१ तोला

निर्माण-विधि—सबको कूट-पीस कर चूर्ण बनाकर रखें। इसमें ६ माशे चूर्ण मक्खन और मधु दोनों २ तोला में मिलाकर खा लिया करें, ऊपर से गुनगुना और मिश्री मिलाकर दूध पी लें। यह प्रयोग धन्वन्तरि

पुरुषरोगाङ्क के प्रधान सम्पादक श्री पं० ठाकुरदत्त जी शर्मा 'अमृतधारा' ने उक्त विशेषांक में दिया है। हमने इसके निर्माण में आंवला चूर्ण के स्थान पर आमलकी रसायन (जिसकी निर्माण-विधि नीचे दे रहे हैं) डाला। यह सस्ता और सफल प्रयोग है। स्वप्न-दोष के लिए अनुपम, शुक्रमेह के लिए रसायन तथा शीघ्र-पतन के विकार को शीघ्र नष्ट कर वीर्य को गाढ़ा करने वाला अत्युत्तम वाजीकरण प्रयोग है। अनेक रोगियों को हमने व्यवहार कराया है।

अमलकी रसायन

सूखे आंवलों का कपड़छान चूर्ण करलें तथा उसमें हरे आंवलों के रस की ७ भावना लगादें। सूख जाने पर पीसकर चूर्ण रूप में प्रस्तुत करें। इसी चूर्ण को उपर्युक्त वाजीकरण प्रयोग के निर्माण में डालें। अपूर्व गुणप्रद योग तैयार होगा। यदि इस चूर्ण-मात्र को ही प्रातः-सायं ३-३ माशे की मात्रा में कुछ अधिक समय तक व्यवहार किया जाय तो वीर्य-विकार को नष्ट करता और प्रमेह-नाशक है।

धातु सञ्जीवनी रस--

कस्तूरी	२ माशा
स्वर्ण वर्क	१ माशा
रौप्य वर्क	३ माशे
केशर, जावित्री	४-४ माशे
छोटी इलायची के दाने	६ माशे
जायफल	५ माशे
वंशलोचन	७ माशे

—इन सबको बकरी के दूध या पान के रस में खरल करके १-१ रत्ती की गोली बनावें।

गुण—मलाई या मक्खन अथवा दूध के साथ १ या २ गोली प्रति-

दिन लेने से वीर्य पुष्ट होता, पुरुषार्थ बढ़ता तथा शीघ्र-पतन नष्ट होता है । यह दूषित एवं सन्तान के अयोग्य वीर्य को सन्तानोपत्ति के योग्य बनाता है ।

नोट—यह प्रयोग भी पुरुषरोगांक में श्री ठाकुरदत्त जी शर्मा ने दिया है । हमने अनेक रोगियों को निम्न प्रकार सेवन कराया तथा आश्चर्य-प्रद लाभ देखा है ।

धातु सञ्जीवनी	१ गोली
मकरध्वज वटी	२ गोली
स्वर्ण वंग	१॥ रत्ती

——तीनों को मिलाकर एक मात्रा । इस प्रकार कोई भी व्यक्ति १ माह तक औषधि-सेवन करले तथा सेवन-काल में संयम से रहे तो मुझे विश्वास है कि उसको निराशा का मुंह नहीं देखना होगा ।

वाजीकरण गुलाबजामुन

कतिपय कोमल प्रकृति एवं शौकीनी मिजाज व्यक्ति आयुर्वेदिक औषधियों से जो स्वादिष्ट नहीं होतीं, घृणा करते हैं । ऐसे व्यक्तियों के लिए निम्न गुलाबजामुन व्यवहार कराना चाहिए । ये स्वादिष्ट हैं अतः आप दवा के रूप में न देकर चटोरे प्रकृति वालों को उनकी इच्छा-पूर्ति के तौर पर दे सकते हैं । इसे वे बड़ी प्रसन्नता-पूर्वक ग्रहण करेंगे और अपनी खोई हुई शक्ति प्राप्त करेंगे । यह प्रयोग भी "पुरुषरोगाङ्क" में महा महोपाध्याय श्री पं० भागीरथ जी स्वामी द्वारा प्रकाशित कराया गया है ।

शुद्ध कौंच-बीज का महीन आटा,
खरैटी श्वेत गुंजा
तालमखाने का चूर्ण समुद्रशोख
उड़द का महीन आटा—समान भाग

निर्माण-विधि—इन सबके बराबर गाय के ताजे दूध का खोवा (मावा) सममाग मिलाकर २-२ तोले के गोल या चपटे बड़े घृत में सेंक कर मधु में डालते जावें और चम्मच से डुबोते जावें । यदि मधु उपलब्ध नहो

सकें तो चीनी (शर्करा) की चाशनी में डालते जावें।

मात्रा—प्रातः सायं १–१ बड़ा खाकर ऊपर से दूध पी सकते हैं।

नपुंसकत्वारि तिला–

आजकल नवयुवक हस्तक्रिया जैसे घातक एवं अप्राकृतिक व्यभिचार के चक्कर में पड़कर अपना सर्वनाश स्वयं अपने हाथों करते हैं। सब कुछ खोने पर उनको चेत होता है और तब वे इधर-उधर मारे फिरते हैं। ऐसे युवकों के लिए निम्न प्रयोग सरल तथा उपयोगी प्रमाणित हुआ है।

बादाम की गिरी	अखरोट की गिरी
पिस्ता	जमालगोटे की गिरी

——समान भाग ले खरल में रगड़ कर धूप में रखें, जब गर्म हो जावे तब ऊपर से थोड़ी सी खांड डालकर पानी के छींटे दें। कुछ देर ऐसा करने पर तैल चमकने लगेगा। अब बादाम रोगन के समान मशीन से तैल निकाल लें।

इस तैल को धूप में बैठ कर रुई की फुरहरी से सीवन तथा सुपारी छोड़ कर आध घन्टे मालिश करें। १ दिन बीच छोड़ते हुए ७ दिन लगावें। इसके लगाने से छोटी-छोटी फुन्सियां कभी-कभी निकल आती हैं। ऐसी दशा में उन्हें साफ कर मोंम और घी का मलहम एक सप्ताह तक लगावें। इसके प्रयोग करने से भी सभी दोष दूर होकर खोई-हुई शक्ति पुनः प्राप्त होती है।

कामिनी मदभंजन वटी–

अकरकरा	लोंग	केशर
सोंठ	पीपर	जावित्री
जायफल	लाल चन्दन	३-३ माशे
शु० गंधक	शु० हिंगुल	६-६ रत्ती
शु० अफीम		१ तोला

निर्माण-विधि——पहले की लाल चन्दन तक आठों दवाओं को ६-६ माशे अलग-अलग कूट-पीसकर कपड़छान करले। फिर ३-३ माशे तोल कर

खरल में डला रगड़ना प्रारम्भ करें। ऊपर से ६-६ रत्ती शु० गंधक और शुद्ध हिंगुल डालते जावें। अन्त में शोधी हुई अफीम भी डाल कर घोटें। घोटते-घोटते थोड़ा-थोड़ा जल भी डालते जावें। जब गोली बनाने योग्य हो जाय तब ३-३ रत्ती की गोलियां बनाकर छाया में सुखालें।

गुण—यदि वीर्य जल्दी-जल्दी निकल जाता हो प्रसंग में रुकावट न होती हो तो आप सोने से पहले एक गोली खाकर ऊपर से मिश्री मिला दूध पीलें। २१ से ४० दिन तक सेवन करने से वीर्य गाढ़ा होकर स्तम्भन-तथा मैथुन-शक्ति बढ़ जाती है। यह सफल प्रयोग है।

नामर्दी-नाशक तैल—

मालकांगनी के बीज		२॥ तोले
अफीम	शृङ्गिक विष	भांग
लौंग	जायफल	जावित्री
दालचीनी		अकरकरा
कौड़िया लोहबान		प्याज के बीज
अण्डी के बीज (छिले हुए)		हरेक १-१ तोला

निर्माण विधि—कूटने पीसने योग्य चीजों को कूट पीस लें। अफीम को कूटने की आवश्यकता नहीं, योंही खरल में डाल दें। फिर आक के दूध में तमाम दवायें एक दिन घोटें और टिकियां बनाकर पाताल यंत्र से तैल निकालें

सेवन-विधि—इस तैल को सीवन व सुपारी बचाकर शेष इन्द्रिय पर अंगुली से धीरे-धीरे मलना चाहिए। ऊपर से बंगला पान गरम करके सुहाता सुहाता लपेट देना चाहिए। पान पर हलका कपड़ा लपेट कर धागा लपेट दें जिससे तैल न छूटे और रात भर लगा रहे।

नोट १—चिकित्सा-काल में लिंग पर पानी न पड़ने दें। स्नान न करें, यदि करना ही हो तो गरम जल से करें।

२—तैल लगाने से फफोले या फुंसी हो जावें तो तैल लगाना बन्द कर सौ बार धोया हुआ मक्खन लगावें। फफोले ठीक होने पर पुनः व्यवहार करें।

अपथ्य—लाल मिर्च, खटाई, कड़ुआ तैल तथा अधिक गर्म व शीतल पदार्थों से परहेज करें।

गुण—यह तैल नसों में भरे दूषित पानी को निकाल कर उभरी नसों को दबाता तथा विकृति को दूर कर नामर्दी का नाश करने वाला है।

यह प्रयोग धन्वन्तरि -'पुरुष रोगांक' में प्रकाशित हुआ है। हमने कई रोगियों को सफलता के साथ व्यवहार कराया है।

मधुमेह की सफल-चिकित्सा—

नागपुर के माननीय श्री०पं० गोवर्द्धन शर्मा छांगाणी जी ने धन्वन्तरि में कतिपय मधुमेह—रोगियों की चिकित्सा का वर्णन देते हुए निम्न प्रयोग प्रकाशित कराये थे। उनसे प्रभावित होकर हमने भी २ रोगियों पर परीक्षा की है। ये प्रयोग सफल प्रमाणित हुए हैं पाठकों से निवेदन है कि वे अपनी चिकित्सा में आये मधुमेह रोगियों को इनका व्यवहार अवश्य करायें।

मधुमेह संहार रस---

जायफल　　जावित्री　　लवंग

छोटी इलायची के दाने　　काली मिर्च

कपूर देशी　　अभ्रक भस्म　　चन्द्रोदय

प्रत्येक १—१ तोला

दालचीनी　　श्वेत धतूरे के अशुद्ध बीज

लोह भस्म　　हिंगुलोथ पारद

शुद्ध गंधक　　पांचों २॥-२॥ तोला

अफीम　　१४ तोले

खसखस के बीज　　४ तोले

इमली के बीज (साफ धोकर निकाले हुए तथा सूखे) २ तोला

प्रथम पारद गंधक की कज्जली करलें। तत्पश्चात् चन्द्रोदय, तथा

लोहभस्म मिलावें। सब एक जीव हो जाने पर शेष बनौषधियों का कपड़छान चूर्ण मिलाकर आठ प्रहर मर्दन करें। इसके अनन्तर धतूरे के पत्तों का रस इतना मिलावें कि जिसमें घोटने पर गोली बन सकें। गोली उड़द-प्रमाण बनालें। रात को एक गोली दी जाती है।

सेवन-विधि——रात्रि को सोते समय केवल एक गोली रोजाना १-२ घूंट गरम दूध के साथ सेवन करावें।

नोट १——रात्रि को भोजन के बाद दो गोली आरोग्यवर्द्धिनी वटी व जल के साथ देते रहना चाहिए। प्रयोग निम्न प्रकार है।

३——प्रयोगारम्भ के पहले हल्का विरेचन देकर १-२ साफ दस्त करा दिये जाने अत्यावश्यक हैं।

३——उक्त प्रयोग के साथ हम मधुमेह-रोगी को गूलर-पत्र-स्वरस १-१ तोला प्रातः रोजाना देते रहे हैं। यह स्वरस भी रोग को नष्ट करने में सहायता देता है।

आरोग्यवर्द्धिनी वटी–

शुद्ध पारद	शुद्ध गंधक
लोह भस्म	ताम्र भस्म
अभ्रक भस्म	—पांचों १-१तोला
बड़ी हरड़ का छिलका	४ तोला
बहेड़े ३ तोला	आंवले ३ तोला
शिलाजीत १५ तोला	कुटकी ७० तोला
गूगल २० तोला	चित्रक-छाल २० तोला

नीम के पत्तों को कूटकर जल के साथ वस्त्र से छानकर इसकी तीन भावना दें। गोली जंगली बेर के प्रमाण की बनावें।

स्तम्भन पर–

योग नं० १

जायफल दखिनी १ नग, अजवाइन २ माशा, शु० धतूरे के बीज २ नग, सब वस्तुओं को बारीक पीसकर एक सेर दूध डालकर औटावें। जब दूध औटाते-औटाते आधा शेष रह जाय तब उतार कर ठंडा करके मिश्री मिलाकर पीवें और दो घंटा बाद मैथुन करे तो इससे तिगुनी रुकावट (स्तम्भन) होती है।

योग नं० २

उत्तम ब्राण्डी १५ तोला	उत्तम शिलाजीत १ तोला
केशर काश्मीरी १ तोला	लोहवान कौड़िया १ तोला
कस्तूरी १ तोला	अम्बर ३ माशा
कपूर ३ माशा	अफीम ६ माशा

विधि—अफीम के टुकड़े करके ब्राण्डी में डाल दे और अन्य सब चीजों का चूर्ण करके ब्राण्डी में डालकर खूब हिलावे और सात दिन रखा रहने दें। प्रतिदिन तीन चार बार शीशी को खूब हिला दिया करे। सात दिन बाद नितार कर किसी काच की डाट वाली शीशी में रख लें। प्रयोग बनाते समय औषधि द्रव्य उत्तम से उत्तम व्यवहार करें। ब्राण्डी, शिलाजीत, केशर, कस्तूरी और अफीम यदि उत्तम नहीं होगी तो औषधि का उचित प्रभाव नहीं होगा।

गुण—इस औषधि की १० बूंद औटे हुए ५ तोले दूध में मिलाकर मैथुन से १ घंटा पूर्व सेवन करें ऊपर से जितना दूध पी सकें पीवें। यह प्रयोग अवश्य स्तम्भन करता है। स्तम्भन के लिये अब तक सैकड़ों प्रयोगों की परीक्षा रोगियों पर की है। किन्तु किसी से उत्तम फल नहीं मिला। यह प्रयोग भी आश्चर्यप्रद स्तम्भन तो नहीं करता तथापि अन्य सब प्रयोगों से अधिक शक्तिशाली है। इसको व्यवहार करने वाले प्रायः प्रशंसा करते हैं।

आजकल केशर, कस्तूरी का मिलना दुष्प्राप्य ही हो रहा है कारण अत्यन्त मंहगा है, अतः यदि ये न डालें तो यों ही सादा बनावें पर गुणों में कमी होगी।

स्तम्भन वटी-

योग न० ३

जुन्दवेदस्तर ४ माशा	केसर असली १ माशा
लोहवान सत्व १ माशा	चन्द्रोदय ४ रत्ती
कस्तूरी ४ रत्ती	

विधि—सब को पान के रस या जल में पीस कर ३-३ रत्ती की गोलियां बनावें, सत्व लोहवान विलायती न लें लोहवान का उड़ाया हुआ जोहर लें, सत्व लोहवान सावधानी से बनता है तीव्र अग्नि होते ही पतला तेल सा हो जाता है।

सत्व लोहवान बनाने की विधि—किसी मिट्टी की हांडी में १०-१२ तोला लोहवान का चूर्ण डालकार मुख पर कांसे का सीधा कटोरा रखकर कपड़मिट्टी करो और कटोरे में जल भर दो। और जब जल गरम हो जाय तब पानी बदल लें और मन्द-मन्द अग्नि लगावें। ६ घंटे पश्चात् अग्नि बन्द कर दें और शीतल होने पर कटोरे के पेंदे में लगा सत्व लोहवान खुरच लें। १ बार में २-१॥ माशा सत्व निकलेगा।

व्यवहार विधि—वाजीकरण के लिये १ गोली रात को सोते समय गरम करके शीतल किये हुये और मिश्री मिले हुए गाय के दूध के साथ सेवन करावें। स्तम्भन के लिये जिस दिन चाहे—मैथुन से ४ घंटे पूर्व २ गोली दूध के साथ सेवन करें उसके बाद अर्थात् ४ घंटों में खटाई, नमक का सेवन न करें। यह प्रयोग श्री पं० ठाकुरदत्त जी शर्मा अमृतधारा वालों का धन्वन्तरि के अनुभूत योगांक में प्रकाशित हुआ था उस समय से हम बराबर रोगियों पर व्यवहार करते हैं। अहिफेन मिश्रित औषधियों से भी अधिक यह प्रयोग स्तम्भन करता है, सुस्ती, निर्बलता और शीघ्रपतन के लिये रामबाण है।

कामिनीमदभंजन वटी नं० २-

अफीम	केशर	शुद्ध एलुआ
शुद्ध धतूरा	शुद्ध विष	शुद्ध कुचला
जायफल	रस सिंदूर	प्रत्येक १-१ भाग
शुद्ध भांग (जल से धुली)		८ भाग

विधि—यथाविधि पीसकर ताड़ की जड़ के रस में घोटकर १-१ रत्ती की गोली बनावें। प्रातः-सायं पान के रस व शहद से यह स्तम्भक और अपूर्व शक्तिवर्धक है। उत्तम वाजीकरण औषधि है। वैद्य सुन्दरलाल जी दमोह के योगों से यह संग्रह किया है, इसके द्रव्यों से ही अनुमान कर लें योग कितना, कार्यकर हो सकता है।

मदन वटी-

स्वर्ण वंग		स्वर्ण माक्षिक भस्म
त्रिधातु भस्म (पीत)		१-१ तोला
शुद्ध हिंगुल		३ माशा
सत् शिलाजीत		३ तोला
सिद्ध मकरध्वज		१॥ तोला
कस्तूरी	केशर	अम्बर
शुद्ध कुचला चूर्ण		अहिफेन
		—प्रत्येक ६-६ माशा
अकरकरा चूर्ण		१ तोला

विधि—सर्वप्रथम शिलाजीत सत्व को कुछ जल में डालकर अग्नि की सहायता से विलीन एवं गाढ़ा हो जाने पर प्रथम चार चीजें और सिद्ध मकरध्वज, अकरकरा एवं कुचला (चूर्ण करके) प्रक्षेप रूप में मिलालें इस प्रक्रिया से सम्पूर्ण पिण्ड की घनता का ध्यान रखें कि गोलियां बनाने लायक स्थिति में आ जाय। ३-३ रत्ती की गोलियां बनाकर शीशी में भरकर उस

शीशी को १-१।। माह तक जो या गेहूँ के ढेर में दबाकर रखें। पश्चात् आवश्यकतानुसार १ से २ गोली तक प्रतिदिन रोगी को प्रयोग करावें।

अनुपान—उष्ण दुग्ध (इलायची और पीपली से साधित यह नपुंसकता ध्वजभंग (इन्द्रिय शैथिल्य) एवं शीघ्रपतन में इससे बड़ा लाभ मिलता है—यह योग आचार्य श्री ब्रह्मदत्त जी शर्मा बेगूसराय का है जो उन्होंने हमारे यहां धन्वन्तरि गुप्तसिद्ध प्रयोगांक में प्रकाशित कराया था। पाठक लाभ उठावें। इस योग में भी बहुमूल्य द्रव्यों का प्रश्न है जो बना सकें वे अवश्य बनावें।

लिंगवर्धक तैल-

अश्वगंधा	२० तोले
जटामांसी	५ तोले
शतावरी	१० तोले
कुष्ठ (कूठ)	५ तोले
दाड़िम पुष्प	१० तोले
कंटकारी फल	५ तोले
तिलका तेल	१। सेर

विधि—उपरोक्त द्रव्यों का कल्क कर दूध और तेल में पाक करें।

उपयोग—इस तेल की मालिश से पुरुष के गुप्त भाग (शिश्न) पुष्ट होता है। कर्ण पाली और स्त्री के स्तनों पर मालिश करने से वे कठिन और पुष्ट होते हैं। धैर्य से प्रयोग करें, इस प्रयोग में प्रातः और रात्रि दोनों समय १ तोला तैल लेकर उसको अच्छी तरह अभ्यंग (मालिश) करें। स्थायी और निश्चित लाभ होता है, यह प्रयोग श्री चन्द्रशेखर जी गोपाल जी ठक्कर बम्बई का अनुभूत है हमने भी इसको रोगियों पर अनुभूत किया—जो स्वयं सिद्ध है।

।। समाप्त ।।

क्यों आप रोगी हैं?

और चिकित्सा कराते-कराते परेशान हो गये हैं तथा आपको आरोग्य लाभ नहीं होता है तो अपने रोग का संक्षिप्त व्यौरेवार हाल लिखकर हमारे चिकित्सा विभाग को भेजकर उचित सम्मति प्राप्त करें। यदि आप लिखेंगे तो आपके रोग के अनुरूप औषधि भी भेज देंगे। उत्तर के लिये लिफाफा रखना न भूलें।

हमारे चिकित्सा-विभाग से अनेक कष्टसाध्य रोगी नित्य ही औषधियां मंगाते और व्यवहार कर शीघ्र आरोग्य लाभ करते हैं। सम्मति देने का किसी प्रकार का शुल्क नहीं लिया जाता है। रोगी फाइल बनाने का शुल्क २) मनीआर्डर से भेजें। पत्र संक्षेप में तथा स्पष्ट लिखें।

—पता—

धन्वन्तरि कार्यालय [चिकित्सा-विभाग]

विजयगढ़ (अलीगढ़)

धन्वन्तरि प्रेस, विजयगढ़ मे मुद्रित।